स्वामी विवेकानन्द का वेदान्त दर्शन

अमित वाजपेयी, संतोष गर्ग, पूजा त्रिपाठी

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, साईंनाथ विश्वविद्यालय, राँची

डॉ0 रश्मि शुक्ला

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

सार

भारत में जितने दार्शनिक सम्प्रदाय, हैं, वे सभी वेदान्त दर्शन के अन्तर्गत आते हैं। वेदान्त की कई प्रकार की व्याख्याएँ हुई। और मेरे विचार से वे सभी प्रगतिशील रही हैं। प्रारम्भ में व्याख्याएँ द्वैतवादी हुई, अन्तमें अद्वैतवादी। वेदान्त का शाब्दिक अर्थ है, वेदों का अन्त'। वेद हिन्दुओं के आदि धर्मग्रन्थ है। कभी-कभी पाश्चात्य देशों में 'वेद' को केवल ऋचाएँ और कर्मकाण्ड ही समझा जाता है। किन्तु अब इनको अधिक महत्व नहीं दिया जाता, और भारत में साधारणत: वेद शब्द से वेदान्त ही समझा जाता है। वेदान्त का शाब्दिक अर्थ है 'वेद का अंत'। वेद हिंदुओं के आदि धर्मग्रन्थ है। भारत एक धर्मप्रधान देश है, जिसमें प्रत्येक को धार्मिक स्वतंत्रता रहती है कि वह किसी भी धर्म को मान सकता है या अनुसरण कर सकता है। प्रत्येक धर्म किसी न किसी दर्शन से प्रभावित होता है। विवेकानंद जी के विचार से क्षेत्र में उल्लेखनीय हैं। उन्होंने हमारे भारत में हीनहीं, वरन् भारत के बाहर भी जाकर वेदान्त के सम्बन्ध में अपनी वाणी का ऐसा जादू चलाया,जिससे सभी उस पर सोचने के लिए मजबूर हो जाते थे। स्वामी विवेकानन्द जी ने ''वेद को दो अंशों में विभक्त माना है, कर्मकाण्ड तथा ज्ञान काण्ड। कर्मकाण्ड के अंन्तर्गत ब्राह्मणों के प्रख्यात मंत्र तथा अनुष्ठान आते हैं। जिन ग्रंथों में अनुष्ठा आदि से भिन्न आध्यात्मिक विषयों का विवरण है, उन्हें उपनिषद् कहते हैं। उपनिषद् ज्ञानकाण्ड के अंतर्गत है।

स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारतीय दार्शनिकों में प्रमुख स्थान रखते है। इन्होंने वेदान्त दर्शन को व्यावाहारिक बनाने के साथ ही उसे सामान्य मनुष्य तक पहुँचाने का प्रयास किया। इस दर्शन को पश्चिमी जगत के समक्ष रखने का प्रयास किया। वैदिक दर्शन के प्रति मिथ्या आरोपों को निर्मूल सिद्ध करने के लिए विवेकानन्द ने तर्कीय विधि का उपयोग भी किया है। उनका यह दृढ़ विश्वास है, कि वेदान्त दर्शन बुद्धि विलास का विषय नहीं हैं वह एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। यह दर्शन एक देश एवं काल के लिए नहीं हैं इसके आधार पर एक सार्वभौमक जीवन पद्धति का निर्माण किया जा सकता है।

इस दर्शन में मानव जीव के वे शाश्वत् मूल्य निहित है। जो हमारे जीवन को प्रत्यक प्रकार की विभीषका से उबारने में सक्षम है। स्वामी विवेकानन्द ने वैदिक दर्शन एवं धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए जीवन भर प्रयास किया। विवेकानन्द वेदांत दर्शन की एक नवीन व्याख्या करते प्रतीत होते हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में वेदांत दर्शन का समुचित अध्ययन करके सामान्य बुद्धि के लिए सुलभ कराकर उसे जीवन से जोड़ने में प्रस्तुत किया किसी अन्य समकालीन दार्शनिक ने नहीं किया। उन्होंने माना है कि वेदांत शुष्क तत्व मीमांसीय सिद्धान्तों का जमघट मात्र नहीं है वरन् यह सरलतम् जीवन दर्शन है। जिसकों सामान्य व्यक्ति भी जीवन में उतार सकता है।

1987 ई. में पश्चिमी देशों में वेदान्त दर्शन से प्रभावित करने वाले वे पहले व्यक्ति थे। उन्होंने पश्चिम की भौतिकवादी जनता के सम्मुख भारत के आध्यात्मवाद का महानतम् आदर्श प्रस्तुत करके अपने देश की वास्तविक चिन्तनधारा का चित्र प्रस्तुत किया। स्वामीजी ने वेदान्त की

युक्ति संगत विज्ञान सम्मत, व्याहनुकूल व्याख्या की। विवेकानन्द का मानना है कि वेदान्त दीप से दरिद्र की कुटी प्रकाशित हो सकती है। स्वामी के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को छोटे कार्य निष्कपट भाव से करना चाहिए। स्वामी जी ने वेदान्त को अधिक व्यवहारिक बनाने के लिए उसकी प्रवृत्तिपरक व्याख्या की है।

विवेकानन्द का दार्शनिक चिन्तन

स्वामी विवेकानन्द रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। परमहंस ने इस सत्य की अनुभूति की थी कि परमात्मा आत्मा में है और आत्मा परमात्मा में है और उन्होंने इस सत्य की अनुभूति अपने शिष्य विवेकानन्द को भी कराई थी। इसके साथ-साथ श्री विवेकानन्द ने वेदों और उपनिषदों का गहन अध्ययन किया और उनके द्वारा प्रतिपादित सत्यों की जीवन में अनुभूति की थी। स्वामी जी के विचार केवल तार्किक ही नहीं हैं। वैदिक धर्म और दर्शन भिन्नताओं का योग है। स्वामी विवेकानन्द वेदान्त दर्शन को मानते थे। वेदान्त के भी तीन रूप हैं- द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैत। स्वामी जी अद्वैत के समर्थक थे। इनके अनुसार द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैत, इनमें कोई अन्तर नहीं है, ये तीनों वेदान्त दर्शन के तीन सोपान हैं, जिनका अन्तिम लक्ष्य अद्वैत की अनुभूति ही है। इतना ही नहीं, अपितु स्वामी जी तो विश्व के सभी धर्मों और दर्शनों को अन्त में अद्वैत की ओर झुका बताते थे।

धर्म और दर्शन के प्रति स्वामी जी का दृष्टिकोण बड़ा वैज्ञानिक था। इन्होंने स्पष्ट किया कि कला, विज्ञान और धर्म एक ही परम सत्य को व्यक्त करने के तीन विभिन्न साधन हैं। एक स्थान पर इन्होंने कहा कि- 'जब विज्ञान का शिक्षक यह कहता है कि समस्त वस्तुएँ एक ही शक्ति की द्योतक हैं तो क्या आपको ईश्वर की याद नहीं आती जिसके विषय में आपने उपनिषदों में पढ़ा है।' और यही तो अद्वैत वेदान्त कहता है। अद्वैत वेदान्त को ये सार्वभौमिक विज्ञान धर्म कहते थे। इन्होंने वेदान्त को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखने-समझने और उसकी वैज्ञानिक व्याख्या करने का प्रयास किया है। यही उनके अद्वैत वेदान्त का नयापन है। और इसी आधार पर इनके दार्शनिक चिन्तन को नव्य वेदान्त कहा जाता है। यहाँ स्वामी जी के नव्य वेदान्त की तत्त्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, और आचार मीमांसा प्रस्तुत है।

मानसिक एवं बौद्धिक विकासः स्वामी जी ने भारत के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण उसके बौद्धिक पिछड़ेपन को बताया और इस बात पर जोर दिया कि हमें अपने बच्चों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना चाहिए और इसके लिए उन्हें आधुनिक संसार के ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराना चाहिए, जहाँ से जो भी अच्छा ज्ञान एवं कौशल मिले उसे प्राप्त करना चाहिए और उन्हें संसार में आत्मविश्वास के साथ खड़े होने की सामर्थ्य प्रदान करनी चाहिए।

राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व का सिद्धान्तः स्वामी जी के समय हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था, हम परतन्त्र थे। स्वामी जी ने अनुभव किया कि परतन्त्रता हीनता को जन्म देती है और हीनता हमारे सारे दुःखों का सबसे बड़ा कारण है। अतः जब वे अमेरिका से भारत लौटे तो इन्होंने भारत की पवित्र भूमि पर पैर रखते ही युवकों का आह्ववान किया- 'तुम्हारा सबसे पहला कार्य देश को स्वतन्त्र कराना होना चाहिए और इसके लिए जो भी बलिदान करना पड़े, उसके लिए तैयार होना चाहिए। इन्होंने उस समय ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया जो देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करे, उन्हें संगठित होकर देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत रहे, परन्तु ये संकीर्ण राष्ट्रीयता के हामी नहीं थे। ये तो सब मनुष्यों में उस परमात्मा के दर्शन करते थे और इस दृष्टि से विश्वबन्धुत्व में विश्वास करते थे।

धार्मिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक विकासः स्वामी जी शिक्षा द्वारा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास पर समान बल देते थे। इनका स्पष्ट मत था कि मनुष्य का भौतिक विकास आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में होना चाहिए और उसका आध्यात्मिक विकास भौतिक विकास के आधार पर होना चाहिए और ऐसा तभी सम्भव है जब मनुष्य धर्म का पालन करे। धर्म को स्वामी जी उसके व्यापक रूप में लेते थे। इनकी दृष्टि से धर्म वह है जो हमें प्रेम सिखाता है और द्वेष से बचाता है, हमें मानवमात्र की सेवा में प्रस्तुत करता है और मानव के शोषण से बचाता है और हमारे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास में सहायक होता है। स्वामी जी मनुष्य को प्रारम्भ से ही ऐसे धर्म की शिक्षा देने पर बल देते थे। इनकी दृष्टि से ये सब गुण हमारे अद्वैत वेदान्त धर्म में है, यह संसार में एकत्व भाव की अनुभूति कराता है और

सबसे प्रेम करना सिखाता है। इनकी दृष्टि से संसार के अन्य धर्म भी कुछ ऐसी ही शिक्षाएँ देते हैं पर उन सबमें हमारा भारतीय वेदान्त धर्म सर्वश्रेष्ठ है। अतः हमें प्रारम्भ से ही उसकी शिक्षा देनी चाहिए। साथ ही बच्चों को जीवन के अन्तिम उद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति के लिए प्रारम्भ से ही ज्ञानयोग, भक्तियोग अथवा राजयोग की ओर उन्मुख करना चाहिए। इनकी दृष्टि से वास्तविक शिक्षा वही है जो मनुष्य को भौतिक जीवन जीने के लिए और आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए तैयार करती है।

शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन

स्वामीजी के जीवन-दर्शन के समान उनके शिक्षा-दर्शन में भी हमें समन्वयवादी दृष्टिकोण की झलक मिलती है। शिक्षा के विभिन्न अंगों के सम्बन्ध में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि चिन्तन और क्रिया में किसी प्रकार का विरोध नहीं है। दूसरे शब्दों में ज्ञान, कर्म और भक्ति का पारस्परिक सम्बन्ध है। स्वामी जी शिक्षा-प्रणाली में आमूल परिवर्तन करना चाहते थे। उन्होंने एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा संस्था स्थापित करने का संकल्प व्यक्त किया था जिस पर विदेशी चिन्तन तथा संस्कृति का प्रभाव न हो। छात्र पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान को तो सीखें, परन्तु उनकी सांस्कृतिक चेतना मूलतः भारतीय ही रहे। ये समाज के निम्न स्तर के व्यक्तियों को पहले शिक्षा देने के पक्षधर थे। उनकी शिक्षा का मुख्य ध्येय था चाण्डाल को शनैः-शनै ब्राह्मणत्व में परिवर्तन करना। उच्च वर्ग की शिक्षा व सदाचार, जिसपर कि उनका तेज और गौरव निर्भर है, वह अछूतों तथा वनवासियों को भी बेरोक-टोक मिले, यही उनकी शिक्षा का मूल मन्त्र था।

निष्कर्षः

स्वामीजी के शिक्षा-दर्शन से प्रभावित होकर जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है- भारत के अतीत में अटल आस्था रखते हुए और भारत की विरासत पर गर्व करते हुए भी, विवेकानन्द का जीवन की समस्याओं के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण था और वे भारत के अतीत तथा वर्त्तमान के बीच एक प्रकार के स्तम्भ थे।

उन्होंने कहा वेदान्त गृहस्थावस्था के कार्य छोड़ने के उपदेश नहीं देता। वेदान्त के आदर्श को नगरों के कोलाहल के मध्य भी प्राप्त किया जा सकता हैं स्वामी की प्रवृत्ति परक वेदान्त की व्याख्या नवीन है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. पाण्डेय, रामशकल, शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि :आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
2. पाल एस0 के0 गुप्त, लक्ष्मी नारायण, मदन मोहन शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार , इलाहाबाद, कैलाश प्रकाशन।
3. माथुर, एस0एस0, शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर
4. पाण्डेय रामशकल, शिक्षा दर्शन, आगरा विनोद पुस्तक डा0 रार्णेय राघव मार्ग
5. पाण्डेय रामसकल, शिक्षा दर्शन और शिक्षा शास्त्री आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर डा0 राजेय मार्ग।
6. गुप्त लक्ष्मी नारायण, महान पश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री इलाहाबाद कैलाश प्रकाशन 122/145 कल्याण देवी मन्दिर के पास।
7. Broudy Harry S. Building a Philosophy of Educaational, New Delhi. Prentic Hall of India (Pvt) Ltd.
8. Chaube S.P. Great Indian Educational Philosphies, Agra, Vinod Pustak Mandir, Dr, Ranjay Raghaw Marg.
9. Chaube S.P. Recent Educational philosophies in India, New Delh, Vikas Publishing House
10. Chaube S.P. And Chaube Akhilesh Philosopical and sociological foundations of education, Agra; Vinod Pustak Mandir Dr. Ranjey Raghaw Marg.
11. Pandey R.S. An Introduction of Major Philo0sophies of Education Agra, Vinod Pustak Mandir
12. Pandey R.S. Philosophising Education, New Delhi; Kanishka publishing House
13. Radhakrishnan India Philosophy (2 Vols) 20,Radhakrishnan, The Bhagwant Gita.